International Journal of Applied Research 2019; 5(11): 40-43

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2019; 5(11): 40-43
www.allresearchjournal.com
Received: 24-09-2019
Accepted: 28-10-2019

डॉ0 ऋषिकेश मिश्रा
एसोसिएट प्रोफेसर, स्कूल और एजुकेशन, जयुपर नेशनल विश्वविद्यालय, जयपुर, सरला चौधरी, शोधार्थी, भारत।

Corresponding Author:
डॉ0 ऋषिकेश मिश्रा
एसोसिएट प्रोफेसर, स्कूल और एजुकेशन, जयुपर नेशनल विश्वविद्यालय, जयपुर, सरला चौधरी, शोधार्थी, भारत।

हनुमानगढ़ जिले के सरकारी व निजी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के व्यवसायिक तनाव का उनकी शिक्षण प्रभावशीलता पर प्रभाव का अध्ययन

डॉ0 ऋषिकेश मिश्रा

प्रस्तावना

किसी भी समाज की उन्नति का अनुमान उस समाज के शिक्षा के स्तर से लगाया जा सकता है। वर्तमान वैश्विक परिस्थितियों में शिक्षा का विशेष महत्व है। हमारे राष्ट्र में भाषा, क्षेत्र, जाति धर्म आदि विभिन्नताओं का मिश्रण हैं जिनका विकास शिक्षा पर व अध्यापक पर निर्भर करता है।

शिक्षा, समाज को एक पीढ़ी द्वारा अपने से निचली पीढ़ी को अपने ज्ञान के हस्तांतरण का प्रयास है। इस विचार से शिक्षा एक संस्था के रूप में काम करती है। जो व्यक्ति विशेष को समाज से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है तथा समाज के प्रत्येक क्षेत्र की संस्कृति की निरंतर बनाए रखती है।

शिक्षा व्यक्ति की अंतर्निहित क्षमता तथा उसके व्यक्तित्व को विकसित करने वाली प्रक्रिया है। यही प्रक्रिया उसे समाज में व्यस्क की भूमिका निभाने के लिए समाजीकृत करती है तथा समाज के सदस्य एवं एक जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए व्यक्ति कौशल प्रदान कराती है। इसी सन्दर्भ में स्वामी विवेकान्नद जी ने कहा था कि – ''मनुष्य की अन्तनिर्हित पूर्णता को अभिव्यक्त करना ही शिक्षा है।''

शिक्षा व्यक्ति के ज्ञान में वृद्धि करती है जो उसके विकास में सहायक है। व्यक्ति के विकास में वांछनीय परिवर्तन करने के लिए व्यवस्थित शिक्षा तथा योग्य अध्यापकों की आवश्यकता होती है। बालक का सर्वांगिण विकास अध्यापक के आदर्शों सिधान्तों तथा व्यवहार पर निर्भर करता है। जितना महत्व शिक्षा का होता है उतना ही अध्यापक का होता है।

''शिक्षा आयोग ने यह स्पष्ट शब्दों में कहा है कि भारत का भाग्य वर्तमान कक्षाओं में हो रहा है। तथा कक्षाओं का भाग्य निश्चित रूप से अध्यापकों के हाथों में हैं।''

इसी प्रकार माध्यमिक शिक्षा आयोग ने शिक्षा में शिक्षकों की स्थिति निश्चित करते हुए कहा है कि शिक्षक उसकी विशेषताओं शैक्षिक योग्यताओं, व्यवसायिक प्रशिक्षण तथा वह स्थान जो समाज में तथा स्कूल में प्राप्त करता है। शिक्षक के कार्य पर स्कूल की शान एवं राष्ट्र का भविष्य निर्भर करता है।

अध्यापकों के इस प्रगतिशील कार्य में उनके शिक्षण के प्रति राष्ट्र का भी यह कर्तव्य बनता है कि उन्हे समय–समय पर समाज में सम्मान प्रदान किया जाए जिससे अध्यापक का नैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक व आर्थिक स्तर पर विकास हो सके शिक्षा व शिक्षण को निम्नलिखित बातें प्रभावित करती हैः–

1. अध्यापक का व्यवहार – शिक्षा प्रणाली में अध्यापक के व्यवहार को प्रमुख माना जाता है। अध्यापक के व्यवहार का प्रभाव छात्रों में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। परन्तु अध्यापक के व्यवहार को निम्नलिखित कारक प्रभावित भी करते हैः–

1. सामाजिक कारक
2. आर्थिक
3. राजनैतिक
4. व्यक्तिगत
5. भौगोलिक

अध्यापक का व्यक्तित्व– विद्यालय में अध्यापक सबसे प्रमुख होता है जो बालक के व्यक्तित्व निर्माण मैं सहायता करता है। अधिकांश बालकों में उनकी रूचि और आवश्यकता के अनुसार ही परिवर्तन लाने की कोशिश करता है।

अध्यापक प्रभावशीलता की अवधारणा

अध्यापक प्रभावशीलता अधिक भ्रामक प्रत्यय है। प्रभावशीलता एक सापेक्षिक प्रत्यय है। अध्यापक प्रभावशीलता से तात्पर्य शिक्षण कौशल, व्यावसायिक योग्यताओं तथा शिक्षण उद्देश्यों को प्राप्त करने से है। इसको समझने के लिए दो शब्दों को समझना आवश्यक है – 'अध्यापक' एवं 'प्रभावशीलता'। दार्शनिकों ने अध्यापक की परिभाषा करने का प्रयास किया है। रविन्द्रनाथ टैगोर के अनुसार अध्यापक एक जलते हुए दीपक के समान है। एक जलता हुआ दीपक दूसरे दीपक को जला सकता है। छात्रों में अपेक्षित योग्यता होती है उनका संचालन करना अध्यापक का कर्तव्य होता है। एक अध्ययनशील व्यक्ति ही दूसरे को अध्ययन के लिए प्रोत्साहित कर सकता है एक अध्यापक जीवन पर्यन्त छात्र रहता है।

नौकरी तनाव

आज के वैज्ञानिक युग में प्रतिस्पर्धा का दौर है जो प्रत्येक कार्य में तनाव उत्पन्न करता है। प्रत्येक व्यवसाय में प्रबंध तथा संबंध प्रभावित रूप से कार्य करते है प्रत्येक क्षेत्र में तथा कार्य स्थल पर विचारों का टकराव तथा कार्यभार मिलकर तनाव उत्पन्न करते है।

शिक्षकों के सामने अनेक ऐसी परिस्थितियां उत्पन्न होती है जो विद्यालयों वातावरण को प्रभावित करती है। अध्यापक सम्पूर्ण शिक्षा प्रणाली को संचालित करने वाली कड़ी के रूप में कार्य करता है। जब परिस्थितियां अनुकूल नही होगी तो शिक्षा प्रणाली प्रभावित होगी। तनाव समाज, परिवार, राज्य आदि के माध्यम से उत्पन्न होता है।

अध्ययन का औचित्य

तनाव और संतुष्टि व्यक्ति के व्यवहार के वे पक्ष है जो उसके व्यवसाय को प्रभावित करते है। यह समस्या एक व्यक्ति की न होकर सभी कर्मचारियों की मानी जाती है कि कार्यस्थल पर किस प्रकार की कार्य प्रणाली है। नौकरी से संतुष्टि शिक्षकों में एक महत्वपूर्ण कारक है जिसका प्रभाव व्यक्ति के जीवन में सभी क्षेत्रों पर पड़ता है। समाज में उनकी स्थिति, अवकाश के समय का सदुपयोग आदि भी व्यवसाय को प्रभावित करते है। प्रत्येक व्यक्ति को अपने कार्य का हल या समाधान निकालना चाहिए ताकि सरलता से कार्य किया जा सकते।

अध्ययन की उद्देश्य

1. माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की व्यवसायिक तनाव का अध्ययन निम्न के सन्दर्भ में–
   क. लिंग के आधार पर
   ख. विद्यालय के प्रकार के आधार पर
   ग. स्थानीयता के आधार पर
2. माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के व्यवसायिक तनाव का निम्न के आधार पर अध्ययन करना–
   क. लिंग के आधार पर
   ख. विद्यालय के प्रकार के आधार पर
   ग. स्थानीयता के आधार पर
3. माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के व्यवसायिक तनाव का उनकी शिक्षण कुशलता पर निम्न के आधार पर प्रभाव का अध्ययन करना–
   क. लिंग के आधार पर
   ख. विद्यालय के प्रकार के आधार पर
   ग. स्थानीयता के आधार पर

1.19 अध्ययन की परिकल्पनाएंः

1. माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की व्यवसायिक तनाव के प्राप्तांकों के मध्यमानों में निम्न के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता–
   क. लिंग के आधार पर
   ख. विद्यालय के प्रकार के आधार पर
   ग. स्थानीयता के आधार पर

साहित्य समीक्षा

सैल्व, सैल्व मूर्ति (1990) यह खोजते हुए कि तनाव एक बहुत ही गम्भीर प्रकृति का है तो वह लम्बे समय तक चलने वाला और नकारात्मक आयाम का हो सकता है। यह व्यक्ति के प्रदर्शन में गिरावट और उच्चतर तनाव, मधुमेय, चिड़चिडापन, मनौवैहिक रोग जैसे प्रेरित विकारों की और जाता है।

समीता सिंह (2006) ने तनाव को परिभाषित करते हुए बताया कि तनाव अकेले बुद्धिमता द्वारा निर्धारित वर्ण होता बल्कि व्यक्ति का अपने कार्यक्षेत्र में निरतंर प्रतिस्पर्धा का अपने कार्य क्षेत्र में निरतंर प्रतिस्पर्धा भरी प्रक्रिया से होकर गुजरता है जिसमें कार्यक्षेत्र के अनेक व्यक्ति आपस में मिलकर कार्य करते है जहां अपनी–अपनी मांगों के लिए मेहनत करते है तथा भावात्मक रूप से एक–दूसरे से व्यवहार करते है। तनाव कार्यक्षेत्र पर कार्यभार से भावात्मक रूप से प्रभावित होता है।

मूरे, आ.टी. (1988) में माध्यमिक शिक्षक की प्रभावशीलता एवं पठन क्रिया पर व्यक्तिगत व अभिवृत्ति के मध्य सह–सम्बन्ध का अध्ययन किया। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य सेवारत शिक्षकों के स्तर को उनकी अध्यापन की प्रभावशीलता, अध्यापन की अभिवृत्ति और शिक्षक के व्यक्तित्व के द्वारा मूल्यांकन करना था। इस आधार पर उन्होंने पाया कि प्रशिक्षित अध्यापकों की कमी और आजादी के 40 वर्ष बाद भी महिलाओं में प्रवेश प्रक्रिया में कोई अन्तर नहीं आना खराब परिणामों के लिए उत्तरदायी होते हैं। न्यादर्श के रूप में नागपुर, वर्धा, भण्डारा, गढ़चिरौल जिले के माध्यमिक स्कूलों से 500 अध्यापक–अध्यापिकायें लिये गये। न्यायदर्श की प्रकृति उद्देश्यपूर्ण रहे इसके लिए उपकरण मेटलन 16 पर्सनलिटी प्रश्नावली हिन्दी वर्जन ऑफ एस.डी. कपूर अध्यापन प्रभावशीलता प्रमोद कुमार और मूथा डाटा कलेक्शन को हल किया गया।

जनसंख्या

प्रस्तुत शोधकार्य में माध्यमिक स्कूल शिक्षकों में से 100 शिक्षक सरकारी स्कूल 100 शिक्षक निजी स्कूल से तथा 50 पुरूष व 50 महिला शिक्षक के रूप में विभाजित किए गए है।

अध्ययन के उपकरण

शोध हेतु निम्नलिखित प्रश्नावली एवं परीक्षा की आवश्यकता अनुभव की गईः–

क. अध्यापक कार्य तनाव मापनी (नौकरी तनाव) (डॉ0 सतविन्द्र पाल कौर, डॉ0 मीनाक्षी शर्मा)

ख. अध्यापक शिक्षण कुशलता मापनी (प्रमोद कुमार और डी.एन. मुथा)

आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकीः

प्रस्तुत अनुसंधान कार्य में निम्नलिखित विधियों का प्रयोग किया गया हैः–

1. मध्यमान
2. प्रमाप विचलन
3. टी–परीक्षण

तालिका 1 सरकारी व निजी माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के व्यवसायिक तनाव का लिंग के आधार पर अध्ययन करना।

सारणी संख्या 1

समूह	छ	ड	ैण्क्ण्	ष्जष् टंसनम
पुरूष	100	98ण्7	1ण्6	5ण्4
महिला	100	87ण्9	1ण्3	

**Significant at 0.01 level.

विश्लेषण

सारणी संख्या 1 के अनुसार सरकारी व निजी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के नौकरी तनाव पर पुरूष व महिला शिक्षकों के मध्यमान 98.7 व 87.9 प्राप्त हुए है। मानक विचलन की गणना करने पर पुरूष व महिला शिक्षकों के नौकरी तनाव का मान 1.6 व 1.3 प्राप्त हुए है जो तालिका मान से कम है।

अतः शून्य परिकल्पना सरकारी व निजी माध्यमिक विद्यालयों के पुरूष व महिला शिक्षकों के नौकरी तनाव में सार्थक अंतर नही पाया गया को अस्वीकृत किया जाता है। क्योंकि पुरूष व महिला शिक्षकों के मध्यमानों की तुलना करने पर पुरूष शिक्षकों के मध्यमानों की तुलना करने पर पुरूष शिक्षकों का मान महिला शिक्षकों से अधिक है। महिला शिक्षक सरकारी व निजी माध्यमिक विद्यालयों में पुरूष शिक्षकों से अधिक संतुष्ट है अतः पुरूष व महिला शिक्षकों के नौकरी तनाव में सार्थक अंतर होता है।

तालिका 2 सरकारी व माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के व्यवसायिक तनाव का स्थानीयता के आधार पर अध्ययन करना।

सारणी संख्या 2

समूह	N	M	S.D.	't' Value
शहरी	100	107.2	5.96	2.87
ग्रामीण	100	103.1	3.98	

**Significant at 0.01 level.

विश्लेषणः

सारणी संख्या 2 के अनुसार सरकारी व निजी माध्यमिक विद्यालयों के शहरी व ग्रामीण शिक्षकों के मध्यमान 107.2 व 103. 1 प्राप्त हुए है। मानक विचलन की गणना करने पर शहरी व ग्रामीण शिक्षकों के नौकरी तनाव का मान 5.96 व 3.98 प्राप्त हुए है। इनसे प्रप्त 'टी' का मान 2.87 है। जो कि तालिका मान से अधिक हे।

अतः शून्य परिकल्पना शहरी व ग्रामीण माध्यमिक शिक्षकों के की नौकरी तनाव में अंतर नही पाया जाता को अस्वीकृत किया जाता है। अतः हम कह सकते है कि शहरी शिक्षकों व ग्रामीण शिक्षकों के नौकरी तनाव में अंतर पाया जाता है।

तालिका 3 सरकारी व निजी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के व्यवसायिक तनाव का विद्यालयों के प्रकार के आधार पर अध्ययन करना।

सारणी संख्या 3

समूह	N	M	S.D.	't' Value
सरकारी	100	194.7	14.1	2.6
निजी	100	164.1	34.1	

**Significant at 0.01 level.

विश्लेषण

सारणी संख्या 3 के अनुसार सरकारी व निजी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के मध्यमान 194.7 व 164.1 प्राप्त हुए है। मानक विचलन की गणना करने पर सरकारी व निजी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के नौकरी तनाव का मान 14.1 व 34.1 प्राप्त हुए है। इनसे प्राप्त 'टी' का मान 2.6 है जो तालिका मान से कम है।

अतः हमारी शून्य परिकल्पना 'सरकारी व निजी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के नौकरी तनाव में कोई सार्थक अंतर नही पाया जाता अस्वीकृत होती है।

चूंकि सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के नौकरी तनाव के मान निजी विद्यालयों के शिक्षकों के नौकरी तनाव के मान से कम है। अतः हम कह सकते है कि सरकारी व निजी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के मध्य नौकरी तनाव में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है। क्योंकि सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों को स्थायी नौकरी की सुरक्षा है जबकि निजी विद्यालय के शिक्षकों को स्थायी नौकरी की सुरक्षा अनुभव नहीं होती। यह एक ही कारण है जो कुछ तनाव उत्पन्न करता है। अन्यथा कक्षागत शिक्षण सम्मान रूप से करवाते है।

तालिका 4 सरकारी व निजी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के व्यवसायिक तनाव का उनकी शिक्षण प्रभावशीलता पर प्रभाव का अध्ययन करना।

सारणी संख्या 4

चर	छ	ड	ैण्क्ण्	ष्जष् टंसनम
व्यवसायिक तनाव	100	87ण्9	1ण्6	17ण्5
शिक्षण प्रभावशीलता	100	292ण्5	37ण्1	

**Significant at 0.01 level.

विश्लेषणः

सारणी संख्या 4 के अनुसार सरकारी व निजी माध्यमिक विद्यालयों के शहरी व ग्रामीण विद्यालयों के महिला व पुरूष शिक्षकों के व्यवसायिक तनाव और कार्य जबावदेही के प्राप्त मध्यमान 87.9 और 292.5 प्राप्त हुए है। मानक विचलन की गणना करने पर माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के मान 1.6 और 37.1 प्राप्त हुए है जो तालिका मान से अधिक है।

अतः परिकल्पना को अस्वीकार किया जाता है क्योंकि शिक्षकों के व्यवसायिक तनाव का उनकी शिक्षण प्रभावशीलता पर क्षेत्र, लिंग व विद्यालय के प्रकार के आधार पर प्रभाव पाया गया। जिन शिक्षकों ने कार्य के प्रति तनाव या अरूचि थी उनकी शिक्षण दक्षता का स्तर संतुष्ट अध्यापकों से कम पाया गया क्योंकि तनाव ही अध्यापकों में कार्य के प्रति रूचि का अभाव रहा।

निष्कर्ष

- सरकारी व निजी माध्यमिक विद्यालयों के पुरूष व महिला शिक्षकों के व्यवसायिक तनाव पर प्राप्त मध्यमान सार्थकता स्तर 0.01 के स्तर पर सार्थक अंतर पाया गया। अतः हमारी शून्य परिकल्पना सरकारी व निजी माध्यमिक विद्यालयों के लिंग के आधार पर कोई सार्थक अंतर नही पाया जाता को अस्वीकार किया जाता है।
- सरकारी व निजी माध्यमिक विद्यालयों के शहरी व ग्रामीण शिक्षकों का व्यवसायिक तनाव पर प्राप्त मध्यमान सार्थकता स्तर 0.01 स्तर पर सार्थक अंतर पाया गया। अतः हमारी शून्य परिकल्पना सरकारी व निजी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के नौकरी तनाव का स्थानीयता के आधार पर सार्थक अंतर पाया जाता है को अस्वीकार किया जाता है।
- सरकारी व निजी माध्यमिक विद्यालयो के शिक्षकों का नौकरी तनाव पर मध्यमान सार्थकता स्तर 0.01 स्तर पर अंतर पाया गया अतः हमारी शून्य परिकल्पना सरकारी व निजी माध्यमिक विद्यायों के शिक्षकों के व्यवसायिक तनाव का विद्यालयों के प्रकार के आधार पर सार्थक अंतर नही पाया जाता को अस्वीकार किया जाता है।

- सरकारी व निजी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के व्यवसायिक तनाव व उनकी शिक्षण प्रभावशीलता पर प्रभाव पर प्राप्त मध्यमान सार्थकता स्तर 0.01 के स्तर पर प्रभाव पाया गया। अतः हमारी शून्य परिकल्पना सरकारी व निजी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के व्यवसायिक तनाव का उनकी शिक्षण प्रभावशीलता पर सार्थक प्रभाव पाया जाता है को अस्वीकार किया जाता है।

सुझावः

1. अध्यापक अपनी शिक्षण कुशलता को बढ़ाकर अपने शिक्षण स्तर को उच्च करने का प्रयास करेगा।
2. अध्यापक व्यवाय के प्रति तनाव को कम करने का प्रयास करेगा।
3. अध्यापक व्यवसायिक संतुष्टि को बढ़ाने का प्रयास करेगा।
4. अध्यापक व्यवसायिक तनाव को प्रभावित करने वाले कारकों को समझ सकेगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. पी. सिंह एण्ड जी. जोसफ (1995), इम्पैक्ट ऑफ आरगेनाइजेशनल क्लाईमेटस एण्ड शिफ्ट वर्क ऑन लाइफ सैटिसफैक्शन, प्राची जर्नल ऑफ साइकोकल्चरल डोमेन्सन।, 11, 45–52
2. पूर्णिमा माथुर एण्ड अमूल्या खुराना (1996), टीचर्स परसैप्सन ऑफ स्कूल क्लाइमेटस एण्ड सेल्फ एक्चुलाइजेशन, इण्डियन एडॅयूकेशन एब्सट्रैक्ट्स, एन.सी.ई. आर.टी. 3, जुलाई– 1997, 8।
3. सुबुद्धि भगवान (1997), जाब स्ट्रेस एण्ड बर्न आउट इन टीचर्स ऑफ सैकण्डरी स्कूल्स इन उड़ीसा, जनरल ऑफ ऍड्यूकेशन रिसर्च एण्ड एक्सटेंशन, 33(4)
4. आर. नटराजन (2001), स्कूल क्लाइमेट एण्ड जॉब सटिस्फैक्शन ऑफ टीचर्स, जर्नल ऑफ इण्डियन एड्यूकेशन, वॉल्यूम 27, 2, एन.सी.ई.आर.टी., न्यू देहली।